प्रसार बुलेटिन संख्या : 02/2025/4000

बिहार सरकार
कृषि विभाग

मोटे अनाज की खेती

ज्वार का महत्व एवं उत्पादन तकनीक

परिचय एवं महत्व	औषधीय गुणो से परिपूर्ण ज्वार पोषक तत्वों तथा रेशा से परिपूर्ण होता है, जिससे लोग इसका रोटी व चावल के रूप में उपयोग करते है। इसमें अधिक मात्रा में पोटाशियम, फास्फोरस एवं फाइबर रक्त में कोलेस्ट्रॉल स्तर को कम करता है जो उच्च रक्तचाप को नियंत्रित करने में, मोटापा घटाने, रक्त सर्करा स्तर को नियंत्रित करने तथा स्वस्थ हृदय में सहायक सिद्ध होता है। चारे एवं धान्य दोनों फसलों के रूप में ज्वार का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। ज्वार का प्रयोग मुर्गी चारा हरा चारा, सूखा चारा व साइलेज बनाकर पशुओं को खिलाया जाता है।
पोषण मुल्य	दानों में प्रोटिन 10–12%, कार्बोहाईडेट 70–72%, वसा 3% खनिज लवण 2.5%
भूमि का चुनाव	जल निकासयुक्त बलूई दोमट एवं दोमट मृदा सर्वोत्तम होती हैं।
खेत की तैयारी	एक गहरी जुताई तथा 2–3 हैरो से जुताई करें बुवाई से पहले प्रति हेक्टेयर 10–15 टन गोबर की सड़ी खाद या कम्पोस्ट का व्यवहार करें।
शीघ्र पकने वाली उन्नत प्रभेद	सी.एस.एच. 1, सी.एस.एच. 5. मउ 2102 (100–105 दिन) उन्नत प्रभेद है।
मध्यम व देर से पकने वाली उन्नत प्रभेद	सी.एम.बी. 5. सी.एम.बी. 6. सी. एम.बी. 15 (110–125दिन) उन्नत प्रभेद है।
बीज दर (कि./हे.)	12–15 कि.ग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर पर्याप्त है।
बीजोपचार	कैप्टान, थीरम या वाविस्टीन 2.5 ग्रा. प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से अवश्य उपचारित करें।
बुवाई का समय	जून–जुलाई एवं फरवरी माह उपयुक्त समय है।
बुवाई की दूरी (सेमी.)	45 × 15 सेमी. रखते हैं
बुवाई की गहराई	3–4 सेमी गहराई में डालें।
उर्वरक प्रबंधन (असिंचित)	40:30:30 कि.ग्रा./हे. नेत्रजन की आधी तथा फास्फोरस, पोटाश की पूरी मात्रा बुआई के समय तथा नेत्रजन की शेष मात्रा बुवाई के 25–30 दिन बाद डालें।
उर्वरक प्रबंधन (सिंचित)	100/50/40 कि.ग्रा./हे. नेत्रजन की आधी तथा फास्फोरस, पोटाश की पूरी मात्रा बुआई के समय तथा नेत्रजन की शेष मात्रा बुआई के 25–30 दिन बाद डालें।
जल प्रबंधन	खरीफ फसल में सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती। जल निकास का उचित प्रबंध करें।
खरपतवार नियंत्रण	अंतर–वर्ती क्रियाओं के द्वारा खपतवार नियंत्रित/रासायनिक दवा एट्राजीन या सीमाजीन की 0.75 सक्रिय तत्व 800 लीटर पानी के साथ प्रति हेक्टयर प्रयोग करें। यदि फसल में चौड़ी पत्ती वाली खरपतवार ज्यादा है तो 2–4डी 0.6 कि.ग्रा. सक्रिय तत्व तथा 800 लीटर पानी में घोलकर बुवाई के 20–25 दिन पर प्रति हेक्टयर की दर से छिड़काव करें
अन्तवर्ती फसलें	वार के साथ दलहनी फसलों जैसे सोयाबीन, अरहर, मूंग उर्द लाभदायक होता है।
फसलचक्र	ज्वार – जौ / चना / सरसों / मसूर /खेसारी / तीसी / मटर
दाना उत्पादन	35–50 क्विंटल प्रति हेक्टयर हो जाता है।
सुखा चारा उत्पादन	100–150 क्विंटल प्रति हेक्टयर होता है।
हरा चारा उत्पादन	500–600 क्विंटल प्रति हेक्टयर होता है।

ज्वार का फसल

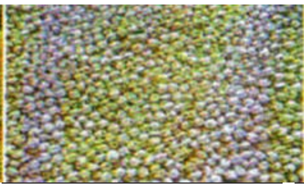
ज्वार का बीज

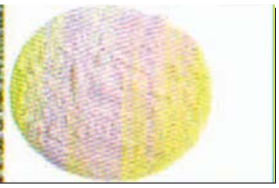
ज्वार का आटा

बाजरा का महत्व एवं उत्पादन तकनीक

परिचय एवं महत्व	चारे एवं धान्य दोनों फसलों के रूप में बाजरा का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। बाजरा का प्रयोग मुर्गी चारा, हरा चारा सुखा चारा व साइलेज बनाकर पशुओं को खिलाया जाता है। इसके दानों से आटा बनाकर रोटी के रूप में भी खाया जाता है। इसमें उपस्थिति लौह एवं कॉपर रक्त संचरण में सहायक होने के साथ–साथ एनीमिया से लड़ने में मददगार होते हैं।
पोषण मुल्य	दानों में प्रोटिन 11–12% कार्बोहाईडेट 65–70% वसा 5% खनिज लवण 2.5% कैल्सियम, लोहा तथा विटामिन्स से परिपूर्ण होता है।
भूमि का चुनाव	जल निकास युक्त बलूई दोमट एवं दोमट मृदा सर्वोत्तम होती है।
खेत की तैयारी	एक गहरी जुताई तथा 2–3 हैरो से जुताई करें बुआई से पहले प्रति हेक्टेयर 10–15 टन गोबर की सड़ी खाद या कम्पोस्ट का व्यवहार करें।
उन्नत प्रभेद	पी.एच.बी 13, पी.एच.बी14. पी. एच. बी15. एच. एच. बी 146, पुसा हाईब्रिड 1201, पुसा हाईब्रिड 1202, तथा प्रोएग्रो 9450 उन्नत प्रभेद है।
बीज दर (कि./हे.)	5–6 कि.ग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर पर्याप्त है।
बीजोपचार	कैप्टान, थीरम या वाविस्टीन 2.5 ग्रा. प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से अवश्य उपचारित करें।
बुवाई का समय	25 जुलाई से 15 अगस्त एवं फरवरी माह उपयुक्त समय है।
बुवाई की दूरी (सेमी.)	45 सें.मी. कतार से कतार और 15 सें.मी. पौधा से पौधा रहता है।
बुवाई की गहराई	2–3 सेमी. रखते हैं।
उर्वरक प्रबंधन	90:45:45 कि.ग्रा./हे. नेत्रजन की आधी तथा फास्फोरस, पोटाश की पूरी मात्रा बुआई के समय तथा नेत्रजन की शेष मात्रा बुवाई के 25–30 दिन बाद डालें।
जल प्रबंधन	खरीफ बाजरा में बलिया निकलते समय नमी अत्यन्त आवश्यक हैं वर्षा नहीं होने पर एक सिंचाई अवश्य करें। गरमा बाजरे में 2–3 सिंचाई मौसमानुसार करें।
खरपतवार नियंत्रण	रासायनिक दवा एट्राजीन 0.75–1.0 कि.ग्रा सक्रिय तत्व 800 लीटर पानी के साथ प्रति हेक्टयर प्रयोग करें। यदि फसल में चौड़ी पत्ती वाली खरपतवार ज्यादा है तो 2–4डी 0.6 कि.ग्रा. सक्रिय तत्व तथा एट्राजीन 1.0 कि.ग्रा सक्रिय तत्व 800 लीटर पानी में घोलकर बुवाई के 20–25 दिन पर प्रति हेक्टयर की दर से छिड़काव करें।
अन्तवर्ती फसलें	बाजरा के साथ दलहनी फसलों जैसे सोयाबीन, अरहर, मूंग, उर्द लाभदायक होता है ।
फसलचक्र	बाजरा – चना / मसूर / जौ / सरसों / खेसारी / तीसी / मटर
दाना उत्पादन	35–50 क्विंटल प्रति हेक्टयर होता है।
सुखा चारा उत्पादन	100–120 क्विंटल प्रति हेक्टयर होता है।
हरा चारा उत्पादन	250–300 क्विंटल प्रति हेक्टयर होता है।

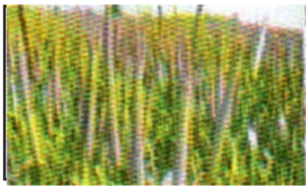
बाजरे का फसल

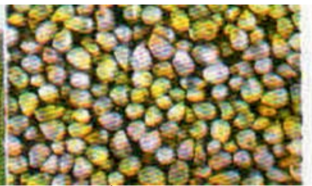
बाजरे का बीज

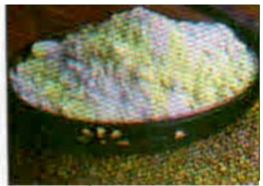
बाजरे का आटा

मडुआ (रागी) का महत्व एवं उत्पादन तकनीक

परिचय एवं महत्व	मडुआ का प्रयोग मुर्गी चारा, हरा चारा, सुखा चारा व साइलेज बनाकर पशुओं को खिलाया जाता है। औषधीय गुणो से परिपूर्ण मंडुवा पोषक तत्वों तथा रेशा से परिपूर्ण होता हैं, जिससे लोग इसका रोटी व चावल के रूप में उपयोग करते है तथा इससे केक, पुडिंग व मिठाईयाँ बनाते है। यह कोलेस्ट्रॉल स्तर को नियंत्रित करने, हड्डियों को मजबूत बनाने तथा मधुमेह रोगी के लिए भी उत्तम आहार है।
पोषण मुल्य	दानों में प्रोटिन 9–10%, कार्बोहाईडेट 70–75% वसा 3% खनिज लवण 2.3% कैल्सियम 0.33%, लोहा तथा विटामिन्स से परिपूर्ण होता है।
भूमि का चुनाव	जल निकासयुक्त बलूई दोमट एवं दोमट मृदा सर्वोत्तम होती हैं।
खेत की तैयारी	एक गहरी जुताई तथा 2–3 हैरो से जुताई करें।
शीघ्र व मध्यम पकने वाली उन्नत प्रभेद (60–100 दिन)	आर.ए.यू. 3. वी. आर. 708, जी.पी. यू. 45. वी. एल. 348 उन्नत प्रभेद है।
देर से पकने वाली उन्नत प्रभेद (110–125 दिन)	वाकुला, वी.एल. 352, जी.पी.यू. 28. जी.पी.यू. 67, जी.पी.य. 85, आर.ए. यू. 8. ए.404 उन्नत प्रभेद है।
बीज दर (कि./हे.)	10–12 कि.ग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर पर्याप्त हैं।
बीजोपचार	कैप्टान थीरम या वाविस्टीन 2.5 ग्रा. प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से अवश्य उपचारित करें।
बुवाई का समय	जून–जुलाई एवं फरवरी माह उपयुक्त समय है।
बुवाई की दूरी (सेमी.)	20–25 × 15 सेमी. रखते हैं।
बुवाई की गहराई	2–3 सेमी, रखते हैं।
उर्वरक प्रबंधन (असिंचित)	60:40:25 कि.ग्रा./हे. नेत्रजन की आधी तथा फास्फोरस, पोटाश की पूरी मात्रा बुआई के समय तथा नेत्रजन की शेष मात्रा बुवाई के 25–30 दिन बाद डालें।
जल प्रबंधन	खरीफ फसल में सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती, जल निकासी का उचित प्रबंध करें।
खरपतवार नियंत्रण	अंतर–वर्ती क्रियाओं के द्वारा खपतवार नियंत्रित करें। यदि फसल में चौड़ी पत्ती वाली खरपतवार ज्यादा है तो 2–4डी 0.6 कि.ग्रा. सक्रिय तत्व तथा 800 लीटर पानी में घोलकर बुवाई के 20–25 दिन पर प्रति हेक्टयर की दर से छिड़काव करें
अन्तवर्ती फसलें	मडुआ के साथ दलहनी फसलों जैसे सोयाबीन, अरहर, मूंग उर्द लाभदायक होता है ।
फसलचक्र	मडुआ – जौ / चना / सरसों / मसूर /खेसारी / तीसी / मटर
दाना उत्पादन	20–25 क्विंटल प्रति हेक्टयर हो जाता है।
सुखा चारा उत्पादन	40–50 क्विंटल प्रति हेक्टयर होता है।
हरा चारा उत्पादन	150–200 क्विंटल प्रति हेक्टयर होता है।

मडुआ का फसल

मडुआ का बीज

रागी का आटा

सॉवा का महत्व एवं उत्पादन तकनीक

परिचय एवं महत्व	सॉंवा प्रयोग मुर्गी चारा, हरा चारा, सुखा चारा व साइलेज बनाकर पशुओं को खिलाया जाता है। औषधीय गुणों से परिपूर्ण सॉंवा पोषक तत्वों तथा रेशा से परिपूर्ण होता हैं, जिससे लोग इसका चावल तथा पशुओं के लिए चारा के रूप में उपयोग करते है। यह मधुमेह रोगी के लिए भी उत्तम आहार है।
पोषण मुल्य	दानों में प्रोटिन 7% कार्बोहाईडेट 65–66%, खनिज लवण 4.3%, रेशा 9%, कैल्सियम, लोहा तथा विटामिन्स से परिपूर्ण होता है।
भूमि का चुनाव	जल निकास युक्त बलूई दोमट एवं दोमट मृदा सर्वोत्तम होती है।
खेत की तैयारी	एक गहरी जुताई तथा 2–3 हैरो से जुताई करें।
उन्न्त प्रभेद	वी.एल. 172. वी. एल. 207. आर.ए.यू. 3. आर.ए.यू. 9 उन्नत प्रभेद है।
बीज दर (कि./हे.)	8–10 कि.ग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर पर्याप्त है।
बीजोपचार	कैप्टान थीरम या वाविस्टीन 2.5 ग्रा. प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से अवश्य उपचारित करें।
बुवाई का समय	जून–जुलाई एवं फरवरी माह उपयुक्त समय है।
बुवाई की दूरी (सेमी.)	20–25 × 15 सेमी, रखते हैं।
बुवाई की गहराई	2–3 सेमी. रखते हैं।
उर्वरक प्रबंधन (असिंचित)	50:40:25 कि.ग्रा./हे. नेत्रजन की आधी तथा फास्फोरस, पोटाश की पूरी मात्रा बुआई के समय तथा नेत्रजन की शेष मात्रा बुवाई के 25–30 दिन बाद डालें।
जल प्रबंधन	खरीफ फसल में सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती। जल निकास का उचित प्रबंध करें।
खरपतवार नियंत्रण	अंतर–वर्ती क्रियाओं के द्वारा खपतवार नियंत्रित करें। यदि फसल में चौड़ी पत्ती वाली खरपतवार ज्यादा है तो 2–4 डी 0.6 कि.ग्रा. सक्रिय तत्व तथा 800 लीटर पानी में घोलकर बुवाई के 20–25 दिन पर प्रति हेक्टयर की दर से छिड़काव करें।
अन्तवर्ती फसलें	सॉंवा के साथ दलहनी फसलों जैसे सोयाबीन, अरहर, मूंग उर्द लाभदायक होता है।
फसलचक्र	सॉंवा – जौ / चना / सरसों / मसूर /खेसारी / तीसी / मटर
दाना उत्पादन	18–20 क्विंटल प्रति हेक्टयर हो जाता है।
सुखा चारा उत्पादन	45–50 क्विंटल प्रति हेक्टयर होता है।
हरा चारा उत्पादन	150–200 क्विंटल प्रति हेक्टयर होता है।

सॉवा का फसल

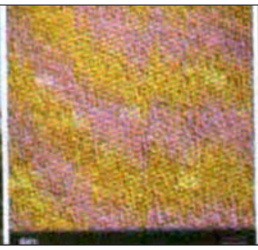
सॉवा का बीज

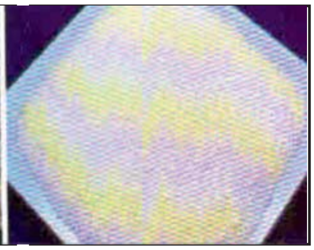
सॉवा का चावल

कोदो का महत्व एवं उत्पादन तकनीक

परिचय एवं महत्व	औषधीय गुणों से परिपूर्ण कोदो पोषक तत्वों तथा रेशा से परिपूर्ण होता हैं, जिससे लोग इसका चावल केक पुडिंग व मिठाईयाँ बनाते है। यह मधुमेह रोगी के लिए उत्तम आहार है।
पोषण मुल्य	दानों में प्रोटिन 8.5:, कार्बोहाईडेट 65:, बसा 1.5: खनिज लवण 3 : कैल्सियम, लोहा तथा विटामिन्स से परिपूर्ण होता है।
भूमि का चुनाव	जल निकास युक्त बलूई दोमट एवं दोमट मृदा सर्वोत्तम होती है।
खेत की तैयारी	एक गहरी जुताई तथा 2–3 हैरो से जुताई करें।
उन्न्त प्रभेद (85 से 90 दिन)	जे.के. 65, जे.के.76, जे.के. 13, जे. के. 41, जे.के. 155, जे.के. 439 उन्नत प्रभेद है।
बीज दर (कि./हे.)	8–10 कि.ग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर पर्याप्त है।
बीजोपचार	कैप्टान थीरम या वाविस्टीन 2.5 ग्रा. प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से अवश्य उपचारित करें।
बुवाई का समय	जून–जुलाई एवं फरवरी माह उपयुक्त समय है।
बुवाई की दूरी (सेमी.)	20–25 × 15 सेमी, रखते हैं।
बुवाई की गहराई	2–3 सेमी. रखते हैं।
उर्वरक प्रबंधन (असिंचित)	50:40:25 कि.ग्रा./हे. नेत्रजन की आधी तथा फास्फोरस, पोटाश की पूरी मात्रा बुआई के समय तथा नेत्रजन की शेष मात्रा बुवाई के 25–30 दिन बाद डालें।
जल प्रबंधन	खरीफ फसल में सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती। जल निकास का उचित प्रबंध करें।
खरपतवार नियंत्रण	अंतर–वर्ती क्रियाओं के द्वारा खपतवार नियंत्रित करें। यदि फसल में चौड़ी पत्ती वाली खरपतवार ज्यादा है तो 2–4 डी 0.6 कि.ग्रा. सक्रिय तत्व तथा 800 लीटर पानी में घोलकर बुवाई के 20–25 दिन पर प्रति हेक्टयर की दर से छिड़काव करें।
अन्तवर्ती फसलें	कोदो के साथ दलहनी फसलों जैसे सोयाबीन, अरहर, मूंग, उर्द लाभदायक होता है ।
फसलचक्र	कोदो – जौ / चना / सरसों / मसूर /खेसारी / तीसी / मटर
दाना उत्पादन	18–20 क्विंटल प्रति हेक्टयर हो जाता है।

कोदो का फसल

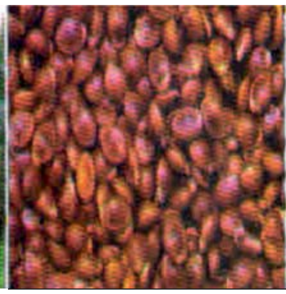
कोदो का बीज

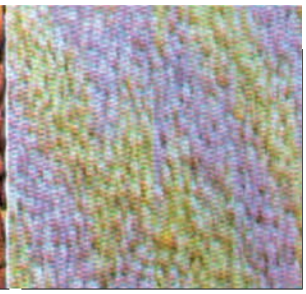
कोदो का चावल

चीना (चेना) का महत्व एवं उत्पादन तकनीक

परिचय एवं महत्व	औषधीय गुणों से परिपूर्ण चीना पोषक तत्वों तथा रेशा से परिपूर्ण होता हैं, जिससे लोग इसका चावल के रूप में उपयोग करते है। यह मधुमेह रोगी के लिए उत्तम आहार है। चेना का प्रयोग मुर्गी चारा, हरा चारा व सुखा चारा पशुओं को खिलाया जाता है।
पोषण मुल्य	दानों में प्रोटिन 12% कार्बोहाईडेट 68%, वसा 1.1% खनिज लवण 3.5% रेशा 2.5% कैल्सियम, लोहा तथा विटामिन्स से परिपूर्ण होता है।
भूमि का चुनाव	जल निकास युक्त बलूई दोमट एवं दोमट मृदा सर्वोत्तम होती है।
खेत की तैयारी	एक गहरी जुताई तथा 2–3 हैरो से जुताई करें।
उन्न्त प्रभेद	जी.पी. यू.पी. 21. टी. एन. ए.यू. 151. टी.एन.यू. 145, एम.एस. 4872, एम.एस. 4884 बी. आर. 7 ।
बीज दर (कि./हे.)	8–10 कि.ग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर पर्याप्त है।
बीजोपचार	कैप्टान थीरम या वाविस्टीन 2.5 ग्रा. प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से अवश्य उपचारित करें।
बुवाई का समय	जून – जुलाई तथा फरवरी माह उपयुक्त समय है।
बुवाई की दूरी (सेमी.)	20 × 15 सेमी, रखते हैं।
बुवाई की गहराई	2–3 सेमी. रखते हैं।
उर्वरक प्रबंधन (असिंचित)	50:40:25 कि.ग्रा./हे. नेत्रजन की आधी तथा फास्फोरस, पोटाश की पूरी मात्रा बुआई के समय तथा नेत्रजन की शेष मात्रा बुवाई के 25–30 दिन बाद डालें।
जल प्रबंधन	खरीफ फसल में सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती। जल निकास का उचित प्रबंध करें।
खरपतवार नियंत्रण	अंतर–वर्ती क्रियाओं के द्वारा खपतवार नियंत्रित करें। यदि फसल में चौड़ी पत्ती वाली खरपतवार ज्यादा है तो 2–4 डी 0.6 कि.ग्रा. सक्रिय तत्व तथा 800 लीटर पानी में घोलकर बुवाई के 20–25 दिन पर प्रति हेक्टयर की दर से छिड़काव करें।
अन्तवर्ती फसलें	चीना के साथ दलहनी फसलों जैसे सोयाबीन, अरहर, मूंग, उर्द लाभदायक होता है।
फसलचक्र	चीना – जौ / चना / सरसों / मसूर /खेसारी / तीसी / मटर
दाना उत्पादन	15–18 क्विंटल प्रति हेक्टयर होता है।
सुखा चारा उत्पादन	35–40 क्विंटल प्रति हेक्टयर होता है।

चीना का फसल चीना का बीज चीना का आटा

कांगनी (काकुन) का महत्व एवं उत्पादन तकनीक

परिचय एवं महत्व	औषधीय गुणों से परिपूर्ण कांगनी पोषक तत्वों तथा रेशा से परिपूर्ण होता हैं, जिससे लोग इसका चावल के रूप में उपयोग करते है। यह मधुमेह रोगी के लिए उत्तम आहार है। चेना का प्रयोग मुर्गी चारा, हरा चारा, व सुखा चारा पशुओं को खिलाया जाता है।
पोषण मुल्य	दानों में प्रोटिन 12.5%, कार्बोहाईडेट 60%, वसा 4.5% खनिज लवण 3% कैल्सियम, लोहा तथा विटामिन्स से परिपूर्ण होता है।
भूमि का चुनाव	जल निकास युक्त बलूई दोमट एवं दोमट मृदा सर्वोत्तम होती है।
खेत की तैयारी	एक गहरी जुताई तथा 2–3 हैरो से जुताई करें।
उन्नत प्रभेद (85–90 दिन)	एस.आइ.ए.326, एस.आइ.ए. 3085 एस.आइ.ए. 2593, बी.जी. 1, पी. एस.
बीज दर (कि./हे.)	4 8–10 कि.ग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर पर्याप्त है।
बीजोपचार	कैप्टान थीरम या वाविस्टीन 2.5 ग्रा. प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से अवश्य उपचारित करें।
बुवाई का समय	जून–जुलाई एवं फरवरी माह उपयुक्त समय है।
बुवाई की दूरी (सेमी.)	20 × 15 सेमी, रखते हैं।
बुवाई की गहराई	2–3 सेमी. रखते हैं।
उर्वरक प्रबंधन (असिंचित)	50:40:25 कि.ग्रा./हे. नेत्रजन की आधी तथा फास्फोरस, पोटाश की पूरी मात्रा बुआई के समय तथा नेत्रजन की शेष मात्रा बुवाई के 25–30 दिन बाद डालें।
जल प्रबंधन	खरीफ फसल में सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती। जल निकास का उचित प्रबंध करें।
खरपतवार नियंत्रण	अंतर–वर्ती क्रियाओं के द्वारा खपतवार नियंत्रित करें। यदि फसल में चौड़ी पत्ती वाली खरपतवार ज्यादा है तो 2–4 डी 0.6 कि.ग्रा. सक्रिय तत्व तथा 800 लीटर पानी में घोलकर बुवाई के 20–25 दिन पर प्रति हेक्टयर की दर से छिड़काव करें।
अन्तवर्ती फसलें	कांगनी के साथ दलहनी फसलों जैसे सोयाबीन, अरहर, मूंग, उर्द लाभदायक होता है ।
फसलचक्र	कांगनी – जौ / चना / सरसों / मसूर / खेसारी / तीसी / मटर
दाना उत्पादन	15–18 क्विंटल प्रति हेक्टयर हो जाता है।

कांगनी का फसल

कांगनी का बीज

कांगनी का चावल

मक्का तथा विशिष्ट मक्के की उन्नत फसल उत्पादन तकनीक

विवरण	मक्का (कॉर्न)	शिशु मक्का (बेबी कॉर्न)	मीठा मक्का (स्वीट कॉर्न)	हरा भुट्टा (ग्रीन काब)	लावा मक्का (पॉप कॉर्न)
संकर प्रभेद	शक्तिमान 1, 2, 3, 4, सबौर संकर मक्का–1, 2 डी.एच.एम.117 डी.एच.एम.121	एच. एम–4, गोल्डेन बेबी, प्रकाश, मेह–14 हिम–129	माधुरी, प्रिया	गंगा–11. शक्तिमान– 1. शक्तिमान– 2. शक्तिमान– 3. शक्तिमान– 4.	
संकुल प्रभेद	सुआन, देवकी, लक्ष्मी	माही, कंचन, बी.एल.42 एम.ई.एच.114, 133	अल्मोड़ा स्वीट कॉर्न	देवकी, लक्ष्मी, सुआन	अम्बर पॉप कॉर्न पर्ल पॉप कॉर्न
बुआई का समय	**खरीफ, रबी, गरमा सभी मौसम में**				
बीज दर (किग्रा/हे.)	20 - 25	30 - 35	8 - 10	20 - 25	12 -15
बुआई की मात्रा (सेमी.)	50 × 20	40 × 20	60 × 20	60 × 20	60 × 20
उर्वरक की मात्रा (कि.ग्रा./हे.)	खरीफ / गरमा फसल– 100:60:40 रबी फसल 180:112:75 नेत्रजन:स्फूर पोटाश	150:75:75 नेत्रजन:स्फूर: पोटाश	**खरीफ एवं गरमा फसल** – 100:60:40 नेत्रजन : स्फूर : पोटाश **रबी फसल** : 120 : 60 : 40 नेत्रजन : स्फुर : पोटाश		
खरपतवार नियंत्रण	रासायनिक दवा एट्राजीन 0.75–1.0 कि.ग्रा सक्रिय तत्व 800 लीटर पानी के साथ प्रति हेक्टयर प्रयोग करें। यदि फसल में चौड़ी पत्ती वाली खरपतवार ज्यादा है तो 2–4डी 0.6 कि.ग्रा. सक्रिय तत्व तथा 800 लीटर पानी में घोलकर बुवाई के 20–25 दिन पर प्रति हेक्टयर की दर से छिड़काव करें ।				
सिंचाई	रबी : 4 से 5 सिंचाई, खरीफ एवं गरमा : 3–4 सिंचाई होता है।				
अन्तवर्ती फसलें	खरीफ मक्का /विशिष्ट मक्के के साथ दलहनी फसलों जैसे सोयाबीन, अरहर, मूंग, उर्द लाभदायक होता है।				
फसलचक्र	मक्का/विशिष्ट मक्के के बाद चना/मसूर/जौ/सरसों/खेसारी/तीसी/मटर				

औसत उपज (क्विं./हे.)	खरीफ एवं गरमा संकर : 50–55 संकुल : 40–45 संकर (रबी) 90–100	संकर : 20–25 संकुल : 15–20	18 – 20	150 – 175	30 – 32
हरा चारा (क्विं./हे.)	300–350	300–350	200–300	200–300	शुष्क चारा 150–175
हरा चारा (क्विं./हे.)	80000	1,25,000	80,000	1,00,000	1,00,000

ज्वार का फसल

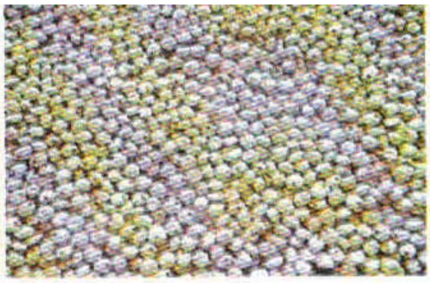
ज्वार का बीज

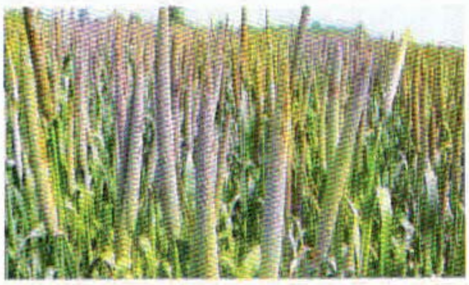
बाजरे का फसल

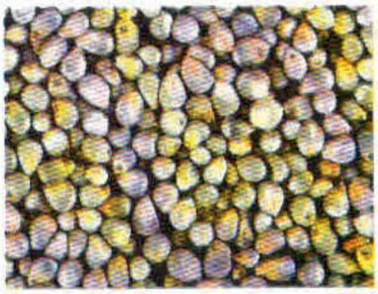
बाजरे का बीज

मंडुवा (रागी) का फसल

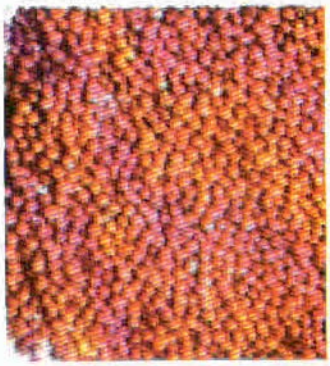
मंडुवा (रागी) का बीज

सॉवा का फसल

सॉवा का बीज

कोदो का फसल

कोदो का बीज

चीना का फसल

चीना का बीज

कांगनी का फसल

कांगनी का बीज

ज्वार का आटा

बाजरा का आटा

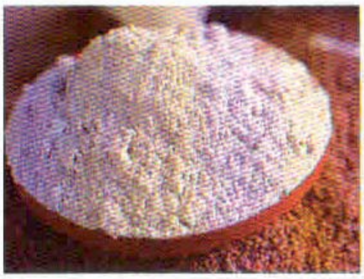
मंडुआ (रागी) का आटा

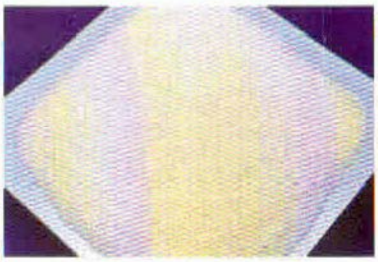
सॉवा का आटा

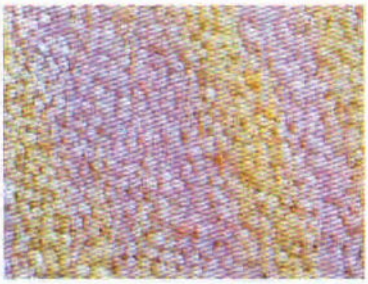
कोदो का चावल

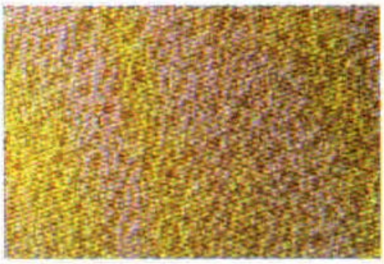
चीना का चावल

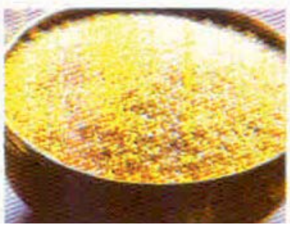

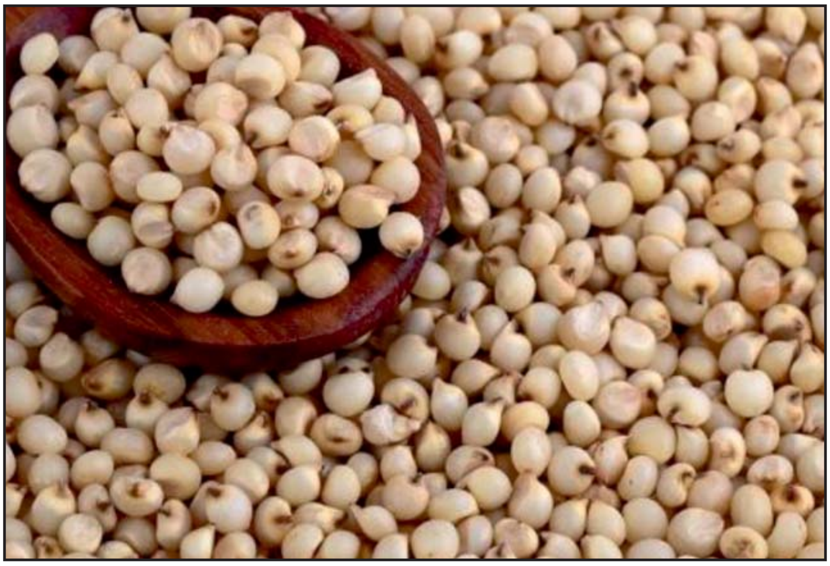

प्रकाशक : धनन्जय पति त्रिपाठी, निदेशक

बिहार कृषि प्रबंधन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान (बामेती)

पो0 बिहार वेटनरी कॉलेज, जगदेव पथ, पटना-800 014

फोन : 2227039, www.bameti.org, ई-मेल : bameti.bihar@gmail.com

बामेती मुद्रित प्रतियाँ 4,000 वर्ष 2025-26

Patliputra Printers, Bikram, Patna

Mob. : 7250158860, email : patliputraprinters@gmail.com